आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 3/मार्च 2023

Received:16/06/2023; Accepted:18/06/2023; Published:24/06/2023

कमलेश्वर की कहानी 'ऊपर उठता हुआ मकान' में वृद्ध विमर्श

[1]डॉ. सुधा कनकानवर

सहायक प्राध्यापिका,

सेंटर फॉर म्यानेजमेंट स्टडीज़, जैन (डीम्ड टू बी युनिवर्सिटी),बेंगलूरू

9986144146

sksudha.kan@gmail.com

[2]डॉ. बी.एस.हेमलता

सह प्राध्यापिका,

सेंटर फॉर म्यानेजमेंट स्टडीज़, जैन (डीम्ड टू बी युनिवर्सिटी),बेंगलूरू

9741711339

hemalatha@cms.ac.in

डॉ. सुधा कनकानवर, डॉ. बी.एस.हेमलता, **कमलेश्वर की कहानी 'ऊपर उठता हुआ मकान' में वृद्ध विमर्श**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 3/अंक 3/मार्च 2023, (349-356)

अनुरूपी लेखक: डॉ. सुधा कनकानवर, सहायक प्राध्यापिका, सेंटर फॉर म्यानेजमेंट स्टडीज़, जैन (डीम्ड टू बी युनिवर्सिटी),बेंगलूरू.

शोध सार :

वृद्ध विमर्श 21 वीं शताब्दी की उपज माना जा सकता है। जिस प्रकार समाज का परिवर्तित रूप साहित्य में प्रतिबिंबित होता आया है उसी प्रकार समाज की आधुनिक समस्याएँ, विमर्श का रूप धारण कर उपस्थित होती आयी हैं। अतः स्त्री विमर्श, आदिवासी विमर्श, दलित विमर्श, किन्नर विमर्श आदि की भाँति वृद्ध विमर्श भी वर्तमान समाज की नई समस्या पर प्रश्नचिन्ह लगाता है तथा यह विचार करने के लिए विवश कर

देता है कि आज समाज तथा परिवार में वृद्धों की स्थिति क्या है ? हिंदी साहित्य में वृद्ध विमर्श का उल्लेख प्रेमचंद युगीन कहानी साहित्य में ही उपलब्ध होता है । प्रेमचंद जी की कहानी 'बूढ़ी काकी', 'बेटों वाली विधवा', जयशंकर प्रसाद की 'ममता', 'गुदड़ी में लाल', भीष्म साहनी की 'चीफ की दावत', 'चाचा मंगल सेन', यशपाल की कहानी 'समय', उषा प्रियंवदा की 'वापसी', मन्नू भंडारी की 'अकेली', विष्णु प्रभाकर की 'खिलौने और बेटे' आदि कहानियों में वृद्धों की समस्याएँ स्पष्ट रूप से गोचरित होती हैं । अतः यह परंपरा एवं विचारधारा कमलेश्वर की कहानियों में भी न्यूनाधिक मात्रा में उपलब्ध होती है। बीसवीं शताब्दी के कथाकारों में कमलेश्वर का स्थान अग्रणी माना जाता है। आपने गद्य की सभी विधाओं में अपना बहुमूल्य योगदान देकर हिंदी साहित्य की श्रीवृद्धि की है। साथ ही एक विशिष्ट 'मीडिया व्यक्तित्व' के रूप में आकाशवाणी, दूरदर्शन, पत्रकारिता आदि सभी में अपना अविस्मरणीय पद चिन्ह अंकित किया है । आप की कहानियाँ स्वतंत्रोत्तर समाज का जीवंत चित्र उपस्थित करतीं हैं, जिनके अंतर्गत समाज की परिवर्तित मनोभावना, मोहभंग, शहरीकरण, मूल्य परिवर्तन आदि का स्पष्ट चित्रण दिखाई देता है साथ ही इनमें स्त्री विमर्श, आधुनिकता, यथार्थवाद, उत्तर आधुनिकता, पूंजीवाद, प्रगतिवाद आदि विचारधाराएँ प्रखर रूप से दिखाई देती हैं। यह कहना अनुचित नहीं होगा कि समाज का कोई भी पक्ष आपकी कहानियों में अछूता नहीं रहा है । अतएव आपकी कतिपय कहानियाँ वृद्ध विमर्श को भी प्रतिबिंबित करती हैं। प्रस्तुत शोध आलेख में कमलेश्वर की कहानी 'ऊपर उठता हुआ मकान' में गोचरित वृद्ध विमर्श को उल्लेखित करने का प्रयास किया गया है।

शोध विवरण :

"भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ताः तयो न तप्तं वयमेव तप्ताः।
कालो न यातो वयमेव याताः तरू तृष्णा न जिर्णो वयमेव जीर्णाः।।

अर्थात भोगों को हमने नहीं भोगा बल्कि भोगों ने ही हमें भोग लिया। तपस्या हमने नहीं की बल्कि हम खुद तप गए। समय कहीं नहीं गया बल्कि हम स्वयं चले गए। इस सभी के बाद भी मेरे कुछ पाने की तृष्णा नहीं गयी बल्कि हम स्वयं जीर्ण हो गए।"-1

भतृहरि द्वारा रचित वैराग्य चरितम का यह श्लोक प्रत्येक वयोवृद्धों के त्याग, समर्पण तथा संघर्ष की गाथा का द्योतक माना जा सकता है। प्राचीन काल से वृद्ध अपने अनुभवजन्य -ज्ञान से परिवार तथा समाज का मार्गदर्शन करते आए हैं। अतएव भारतीय समाज में वृद्धों को विशेष महत्व दिया गया है। रामायण तथा महाभारत में इसका विशेष उल्लेख पाया जाता है। इतिहास में भी वृद्ध चाणक्य के मार्गदर्शन से चंद्रगुप्त के

राज्य स्थापना को वृद्धों तथा उनके अनुभवजन्य ज्ञान को दिया गया सम्मान ही माना जा सकता है। यही परिपठी आज भी भारतीय समाज में कतिपय परिवारों में देखी जा सकती हैं। किन्तु पूर्व काल की अपेक्षा आज यह परंपरा क्षीण होती दिखाई देती है। इसका प्रमुख कारण समाज का परिवर्तित परिवेश, आधुनिक शिक्षा प्रणाली, पाश्चात्य जीवन शैली का अनुसरण, उपभोक्तावाद, बाजारवाद, भौतिकवाद आदि को माना जा सकता है। वर्तमान युवा पीढ़ी विकासवाद की अंधी दौड़ में लीन होकर अपनी सनातन परंपराओं को विस्मृत करती दिखाई देती है। युवा पीढ़ी में व्याप्त स्वकेन्द्रित मनोभावना के कारण परिवार के बुजुर्गों के प्रति उदासीनता तथा नकारात्मक भावना का जन्म हुआ है फलस्वरूप वर्तमान समाज में वृद्धाश्रम तथा उनमें दाखिल होने वाले वृद्धों की अधिक संख्या एक प्रकार की भयावह स्थिति को उत्पन्न कर रही है।

समय का कसूर कहिए या आधुनिक जीवन की आवश्यकता जिस प्रकार पंख निकलने पर पंछी घोंसला छोड़कर उड़ जाते हैं उसी प्रकार आज शिक्षा, नौकरी तथा आर्थिक सुरक्षा की प्राप्ति की खोज में अपने निवास स्थान, माता-पिता, परिवार आदि से दूर हो जाने की अनिवार्यता युवा पीढ़ी में गोचरित हो रही है। युवा पीढ़ी की यह खोज कभी खत्म न होने वाली प्रक्रिया होने के कारण उन्हें अपने माता-पिता के साथ पहले की भाँति जीवन व्यतीत करना असंभव लगने लगा है। उक्त परिवेश का दुष्परिणाम परिवार के वृद्धों पर पड़ता है। विशेषतः माता-पिता को अपनी ढलती उम्र में एकांत जीवन जीने की दुखद स्थिति का निर्माण हो जाता है। कमलेश्वर की कहानी ‘ ऊपर उठता हुआ मकान’ इसका ज्वलंत उदाहरण माना जा सकता है। प्रस्तुत कहानी सन 1959 में लिखी गई थी। यह समय, देश के विकास का समय माना जा सकता है। उक्त समय में भारत में विविधोन्मुखी विकास कार्य संपन्न होने के कारण गाँवों तथा शहरों में विशेष परिवर्तन दिखाई दे रहे थे । गाँव कस्बे में, कस्बा नगर में, तथा नगर महानगरों के रूप में परिवर्तित हो रहे थे तथा गाँव और कस्बे की युवा पीढ़ी शिक्षा तथा नौकरी की तलाश में नगरों की ओर प्रवृत्त हो रही थी । परिणाम स्वरूप अविभक्त परिवारों का विघटन तथा एकल परिवारों की बढ़ती संख्या के कारण समाज में वृद्धों की समस्या ज़ोर पकड़ने लगी थी। कहानीकार ने उक्त समस्या को मुरारी बाबू कथा गौरी नामक दंपति के द्वारा प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है।

प्रस्तुत कहानी में मुरारी बाबू तथा गौरी वृद्ध दंपति हैं जिन्होंने अपने जीवन के 45 वर्ष साथ निभाए और गृसस्थी में संघर्षरत रहें । उनका एकमात्र पुत्र किशन डॉक्टरी करता था तथा माता-पिता से दूर कानपुर में अपने छोटे से परिवार के साथ निवास करता था । जीविकोपार्जन तथा तरक्की की कामना उसके कार्य में स्पष्ट दिखाई देती है फलतः माता-पिता के साथ निवास करने में असमर्थ किशन हर महीने मनीआर्डर द्वारा

धनराशि भेज देता था। मुरारी बाबू तथा गौरी दोनों ही उस मनीआर्डर की प्रतीक्षा में रहते थे अर्थात किशन द्वारा भेजा गया मनीआर्डर ही अब उनके जीवन का आधार था इसका उल्लेख कहानीकार ने इस प्रकार किया है - "उस तारीख को वह (मुरारी बाबू) धुली हुई कमीज पहनकर बैठक में बैठते हैं और मुंह हाथ धोते वक्त याद से दवात में कुछ बूँद पानी डाल लेते हैं। मनीऑर्डर पर दस्तखत करने होते हैं "-२ उक्त वाक्य के द्वारा आर्थिक रूप से संतान पर निर्भर पिता की असहायता स्पष्ट हो जाती है। माता की स्थिति भी इससे भिन्न नहीं दिखाई देती है। जोकि - "घर के भीतर गौरी का कारबार तब तक रुक जाता है जब तक किशन का मनीआर्डर नहीं आता। "-३ उक्त प्रसंग वर्तमान वातावरण में सामान्य रूप से पाया जाता है। माता-पिता आजीवन अपनी संतान के पालन-पोषण में अपने भविष्य की आहुति देते हैं कारण अपने जीवन के संध्याकाल में संतन को अपना आधारस्तंभ मानना स्वाभाविक है ।

वस्तुतः प्रत्येक माता-पिता अपनी संतान को ही निज संपत्ति मानते हैं। अतः अपने जीवन की संपूर्ण पूंजी संतान के भविष्य निर्माण में लगाकर अपने कर्तव्यों की पूर्ति करते हैं। इस प्रकार माता पिता का ढलती उम्र में जब उनका शरीर क्षीण होने लगता है तब बच्चों पर निर्भर होना स्वाभाविक ही नहीं बल्कि धर्म भी है और संतान का धर्म यही है कि माता पिता का ध्यान रखें । वर्तमान में यह स्तिथि हमारे समक्ष उपस्थित हो जाती हैं जहाँ पर वृद्धों में असहायता, अकेलेपन, असुरक्षा तथा अपने ही घर में परावलंबी होने की भावना घर कर लेती हैं वहाँ वे मानसिक व्यथा से त्रस्त होकर एक अनकही कहानी बनकर रह जाते हैं।

मनुष्य का जीवन विभिन्न अवस्थाओं से जुड़ा हुआ है जिसमें बाल्य, किशोर, युवा, प्रौढ़ तथा वृद्धावस्था का कालचक्र चलता रहता है। इन अवस्थाओं में मनुष्य-जीवन का सूक्ष्म अवलोकन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि बाल्यावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक मनुष्य केवल दूसरों के अनुसार, दूसरों की इच्छापूर्ति, तथा दूसरों के प्रति अपनी जिम्मेदारी को पूर्ण करने के लिए कार्यरत रहता है तथा विभिन्न प्रकार के संघर्ष करता है किंतु वृद्धावस्था में अपनी सारी जिम्मेदारियों से मुक्त होकर अपने परिवार के साथ अपने लिए जीने का प्रयास करता है। वृद्धों की मानसिकता को समझने में असफल युवा पीढ़ी केवल धन तथा भौतिक वस्तुओं के द्वारा अपने उत्तरदायित्व को निभाने का प्रयास करती है फलस्वरूप वृद्धों में एक नकारात्मक तथा उदासीनता दिखाई देने लगती है। वर्तमान समाज में ऐसे कई परिवार अपने आस-पास के वातावरण में दिखाई देती हैं जिनमें केवल वृद्ध दंपति मात्र होते हैं। उनकी संतान अन्य शहरों में होती हैं या फिर विदेशों में । अर्थात अपने जीवन का अत्यंत दुर्बल अवस्था को उन्हें एकाकीपन में व्यतीत करना पड़ता है। जिस आयु में संतान की अत्यधिक अवश्यकता होती है उस आयु में उन्हे अकेले छोड दिया जाता है ठीक उसी भाँति जैसे कुछ लोग केवल ऊपर चढने के लिए सीढी का इस्तेमाल करते हैं । फलतः उन्हे वृद्धाप्य एक अभिषाप

लगने लगता है । इस संबन्ध में एक विद्वान् का कथन है - "जिंदगी भर मरते-खपते रहो, कमाते-जोड़ते रहो, संजोते- बनाते रहो, दूसरों के लिए हर पल क्रियाशील रहो और जीवन के अंतिम दिनों में इंद्रियों के दुर्बल और निष्क्रिय पड़ जाने पर जंगलों में ठेल दिए जाओ। निःसंदेह दीर्घ जीवन दीर्घ अभिशाप का ही पर्याय है।"-४ टूटता शरीर, क्षीण होती शक्ति घटता हुआ आत्मविश्वास और चारों ओर घिरा हुआ अकेलापन उन्हें और अधिक दुर्बल बना देता है परिणामस्वरूप युवा पीढ़ी या फिर अपनी संतान के प्रति एक नकारात्मक भावना उनमें जन्म लेना स्वाभाविम माना जा सकता है। इस भावना में भी संतान के प्रति घृणा नहीं बल्कि अतीव प्रेम उनमें गोचरित होता है। प्रस्तुत कहानी में मुरारी बाबू की स्थिति भिन्न नहीं है। कहानीकार ने एक ओर इसका उल्लेख इस प्रकार किया है- "मुरारी बाबू को यह अफसोस भी है कि किशन ने कभी उनका दुख सुख नहीं पूछा। सिर्फ फर्ज अदायगी के लिए रुपया भेज देता है।"-५ वर्तमान समय में अधिकतर संतानों की यही मनोभावना दिखाईदेती है कि धन की आपूर्ति माता-पिता की परेशानी को दूर कर देगी किंतु वे यह समझ नहीं पाते हैं कि वास्तव में माता पिता की वास्तविक आवश्यकता क्या है ? कहानीकार ने एक वृद्ध दंपति के आंतरिक दुख को शब्द- बद्ध करने का प्रयास किया है । प्रत्येक एकाकी माता-पिता की भाँति मुरारी बाबू भी अपने एकाकीपन को दूर करने के लिए किशन के पास चले जाते थे किंतु जब-जब वह अपने पुत्र के पास कानपुर चले जाते थे तब-तब अपने पुत्र को पास न पाकर दुखी होकर लौटते थे। उनकी अस्वस्थता की चिकित्सा शीशे वाली दवाई में नहीं थी जिन्हें उनका पुत्र दिया करता था। उन्हें इस बात का अफसोस अवश्य रहता था कि "किशन...पचासों लोगों की दवा करता है , पर खुद अपने माँ-बाप की हारी बीमारी से उसे कोई मतलब ही नहीं रहता। बहुत हुआ तो हालचाल पूछकर, चलते वक्त सैंपल वाली दवाइयों में से कोई शीशी दे दी और कह दिया, वहाँ से लिखना कोई फायदा हुआ या नहीं। "-६ इस प्रकार के बेगानेपन से उनका मन अधिक दुखी हो जाता कारण वे कभी उन दवाइयों को हाथ नहीं लगाते थे। इससे स्पष्ट हो जाता है की बूढ़े माता-पिता को दवाइयों की नहीं बल्कि प्रेम, विश्वास और अपनेपन की आवश्यकता होती है किंतु अपनी व्यस्तता के कारण संतान कभी इसकी पूर्ति नहीं कर पाती है। फलतः संतान द्वारा प्राप्त अनादर, अवहेलना और अपमान के कारण कोई भी वृद्ध उनके साथ रहना स्वीकार नहीं करता और आश्रय तथा उपचार की आवश्यकता होते हुए भी स्वतंत्र रूप से जीवन चलाने की कामना करने लगते हैं।

समय परिवर्तनशील होता है और समयानुसार परंपरा तथा मूल्य भी बदलते रहते हैं। फलस्वरूप अनादि काल से माता-पिता तथा संतानों के बीच पीढिगत अंतर दिखाई देना स्वाभाविक माना जा सकता है। मूल्य परिवर्तन के कारण पिता-पुत्र तथा माता - पुत्री में सामान्यतः वैचारिक भिन्नता का आना गोचरित होता है जिस प्रकार नई पीढ़ी पुरानी मूल्यों का अनुसरण नहीं करना चाहती हैं उसी प्रकार पुरानी पीढ़ी प्राचीन

मूल्यों को त्यागना नहीं चाहती हैं। फलतः यह टकराव सामान्य रूप से माता पिता तथा संतान के बीच बार-बार उपस्थित हो जाती है। इस स्थिति का सचित्र वर्णन कमलेश्वर की प्रस्तुत कहानी में उपलब्ध होता है। किशन अपनी नौकरी तथा जीविकोपार्जन के कारण माता पिता के पास रहने में असमर्थ था किंतु वह अवश्य चाहता था कि माता-पिता उसके पास कानपुर में रहे। मुरारी बापू अपने जीर्ण-शीर्ण मकान को छोड़कर पुत्र के पास जाना नहीं चाहते थे। यह उनके लिए उनके अस्तित्व का प्रश्न भी था। अपने मन-गत बातों को वह अपनी पत्नी से इस प्रकार व्यक्त करते हैं - " वहाँ निबाह नहीं होगा गौरी !... अब हम अपनी देहरी छोड़कर परदेश में आखरी वक्त का इंतजार करें"-७ प्रस्तुत वाक्य मुरारी बाबू की मानसिक स्थिति का परिचय कराता है तथा प्राचीन मूल्यों के प्रति उनकी मान्यता को भी। उनका टूटता, बिखरता, पुराना घर उनके प्राचीन मूल्यों की ओर संकेत करता है। जिसे वह टूटा हुआ देख कर दुखी होते हैं और बेटे द्वारा पुराने घर की मरम्मद न कराने के कारण कुपित भी। वे उस घर को छोड़ना नहीं चाहते हैं तथा किशन उस घर में आने में असमर्थ दिखाई देता। कारण जिस प्रकार बुढ़ापे को समझौता कहा जाता है उसी प्रकार मुरारी बाबू भी अपनी स्थिति से समझौता कर लेते हैं किन्तु पुत्र के नवीन विचारधारा से नहीं। इसका मार्मिक चित्रण कहानी कार ने इस प्रकार किया है - " दोनों ने ही उस निपट अकेलेपन को स्वीकार कर लिया था ... सारे आश्रय छोड़ दिए थे। होली दिवाली पर किशन के पास कानपुर जाने के लिए दो चार रस्मि -खत आते जाते फिर मुरारी बापू कोई ना कोई बहाना करके कानपुर जाने की बात टाल जाते हैं।"-८ प्रस्तुत वाक्य पुरानी पीढ़ी के पारंपरिक मूल्यों के प्रति मोह को दर्शाने में सफल माना जा सकता है। इस स्तिति में पिता और पुत्र दोनो की लाचारी स्पष्ट दिखाई देती है ।

निष्कर्ष : इस प्रकार कहानीकार कमलेश्वर ने उक्त कहानी के माध्यम से समाज में व्याप्त वृद्धों की समस्याओं को शब्दबद्ध करने का प्रयास किया है, जिसके अंतर्गत प्रत्येक माता-पिता के दुख दर्द, मानसिक व्यथा अकेलापन, बेगानापन आदि अत्यंत मार्मिक रूप से चित्रित हुए हैं। कहानी के अंतर्गत माता-पिता का त्याग और वृद्धाप्य में पुत्र के प्रति उनकी अपेक्षा अत्यंत स्वाभाविक बन पड़ी है। जिस प्रकार संतान केवल चंद पैसों के द्वारा माता पिता के उत्तरदायित्व को निभाना चाहती है उनसे यह प्रश्न करने का प्रयास कमलेश्वर ने किया है कि जो माता पिता आजीवन संतान के भविष्य को सुंदर बनाने के लिए अपने वर्तमान को गवा देते हैं, उनका भविष्य (वृध्याप्य) संतान द्वारा अनदेखा और अनादर क्यों रह जाता है ? कमलेश्वर ने मुरारी तथा उसके पुत्र के माध्यम से पीढ़ी-गत वैचारिक भिन्नता को सचित्र रूप देने का प्रयास किया है जो अत्यंत संदर्भिक प्रतीत

होता है। यह किसी एक परिवार की समस्या नहीं बल्कि प्रत्येक समाज में प्रश्न चिन्ह का रूप धारण कर चुका है। जिसका उपाय नई पीढ़ी तथा पुरानी पीढ़ी दोनों के समझौते से ही संभव हो सकता है।

सन्दर्भ सूची :

1. https://www.wikiwand.com/hi/%E0%A4%B5%E0%A5%88%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%97%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%B6%E0%A4%A4%E0%A4%95%E0%A4%AE%E0%A5%8D
2. कमलेश्वर (2014) समग्र कहानियाँ - 'ऊपर उठता हुआ मकान' :राजपाल एंड संस नई दिल्ली : पृ - 254

   Kamaleshwar (2014) Samagra Kahaniyan –'Upar Uthata Huva Makan': Rajpal and Sons New Delhi, Pg no.- 254
3. संधु डॉ मधु - https://www.rachanakar.org/2007/07/blog-post_10.html

   Sandhu Dr. Madhu - https://www.rachanakar.org/2007/07/blog-post_10.html
4. कमलेश्वर (2014) समग्र कहानियाँ - 'ऊपर उठता हुआ मकान' :राजपाल एंड संस नई दिल्ली: पृ - 258

   Kamaleshwar (2014) Samagra Kahaniyan –'Upar Uthata Huva Makan' : Rajpal and Sons New Delhi, Pg no.- 258.
5. कमलेश्वर(2014) समग्र कहानियाँ - 'ऊपर उठता हुआ मकान' :राजपाल एंड संस नई दिल्ली : पृ - 258.

   Kamaleshwar (2014) Samagra Kahaniyan –'Upar Uthata Huva Makan' : Rajpal and Sons New Delhi, Pg no.-258.
6. कमलेश्वर (2014) समग्र कहानियाँ - 'ऊपर उठता हुआ मकान' :राजपाल एंड संस नई दिल्ली : पृ - 259

   Kamaleshwar (2014) Samagra Kahaniyan –'Upar Uthata Huva Makan' : Rajpal and Sons New Delhi, Pg no.- 259.

7. कमलेश्वर (2014) समग्र कहानियाँ - 'ऊपर उठता हुआ मकान' :राजपाल एंड संस नई दिल्ली : पृ - 259

Kamaleshwar (2014) Samagra Kahaniyan –'Upar Uthata Huva Makan' : Rajpal and Sons New Delhi, Pg no.- 259

8. कमलेश्वर (2014) समग्र कहानियाँ - 'ऊपर उठता हुआ मकान' :राजपाल एंड संस नई दिल्ली : पृ - 259

Kamaleshwar (2014) Samagra Kahaniyan –'Upar Uthata Huva Makan' : Rajpal and Sons New Delhi, Pg no.- 259

****